शोध-ऋतु

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर * जि. नांदेड *

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE

रत्नकुमार सांभरिया ई-विशेषांक

ISSN-2454-6283 **30 May-2022**
IMPACT FACTOR - **(IIJIF-7.312)** **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,
AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक–डॉ.सुनील जाधव,नांदेड 9405384672
तकनीकी सम्पादक–अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

प्रकाशन / प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र

मुद्रण / मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

''शोध–ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।
फॉण्ट–कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।
आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।
चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।
लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे ।
व्हाट्स एप–9405384672

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

PhonePe
ACCEPTED HERE
Scan & Pay Using PhonePe App

or Pay to Mobile Number using PhonePe App
9405384672
Sunil Jadhav

वार्षिक परामर्श मंडल (2022)

- प्रो .डॉ.रामप्रसाद भट, हैम्बुर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
- प्रो.डॉ.रंजित उपुल, केलनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.रिदिमा निशादिनी लंसकारा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.अनुषा सल्वाथुरा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.नुर्मातोव सिराजोद्दीन, उज्बेकिस्तान
- सौ.सविता तिवारी, मॉरिशस
- प्रो.डॉ.मक्सीम देम्चेंको, मास्को, रशिया
- प्रो.डॉ.हिदायतुल्लाह हकीमी, जलालाबाद, अफगानिस्तान
- प्रो.हुरुई,उप–संकायाध्यक्ष,अफ्रीकी–एशियाई भाषा एवं संस्कृति संकाय क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन
- प्रो.विवेक मणि त्रिपाठी, चीन

- प्राचार्य डॉ.आर.एन.जाधव,पीपल्स कॉलेज,नांदेड
- प्र.उपकुलपति डॉ.जोगेन्द्रसिंह बिसेन, स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय, नांदेड
- प्रो.डॉ.मुकेशकुमार मालवीय, हिन्दू बनारस विश्वविद्यालय,बनारस
- प्रो.डॉ.राजेंद्र रावल,राजकोट,गुजरात
- प्रो.डॉ.अरविंद शुक्ल,उत्तर प्रदेश
- प्रो.डॉ.संगम वर्मा,पंजाब
- प्राचार्य.डॉ.राजेन्द्र प्रसाद,प्रतापगढ
- प्राचार्य डॉ.प्रवीण कुमार सक्सेना, गांगड़तलाई,राजस्थान

- प्रो.डॉ मंगला रानी, पटना
- प्रो.डॉ.पठाण रहीम, हैदराबाद
- प्रो.डॉ.श्यामराव राठोड, तेलंगाना
- प्रो.डॉ.भारत भूषण, पंजाब
- प्रो.डॉ.परिमल अम्बेकर, गुलबर्गा
- प्रो.डॉ.ओमप्रकाश सैनी, हरियाणा
- प्रो.डॉ.लक्ष्मी गुप्ता,यमुनानगर,हरियाणा
- प्रो.डॉ.शबाना दुर्यानी, (उर्दू) नांदेड़

अनुक्रमणिका

1.रत्नकुमार सांमरिया की कहानियाँ 7
–डॉ०सूर्यनारायण रणसुभे 7
2.रत्न कुमार सांमरिया के नाटकों में दलित क्रांति चेतना 10
–प्रो.डॉ.रमेश संभाजी कुरे 10
3. 'वीमा' नाटक कथावस्तु एक अध्ययन 12
–डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव 12
4.वीमा नाटक में चरित्र चित्रण 15
–सुषमा कृष्णकुमार यादव 15
5.रुढ सामाजिक धारनाओं को दूर करते वीमा नाटक के पात्र 18
–प्रा.डॉ.मीना भाऊराव घुमे 18
6.रत्नकुमार सांमरिया का नाटक साहित्य (वीमा नाटक के विशेष संदर्भ में...) 23
–डॉ. संजय भाउसाहेब दलंगे 23
7.रत्नकुमार सांमरिया के कथा साहित्य में स्त्री विषयक दृष्टिकोण 26
–नेहा प्रधान 26
8.रत्नकुमार सांमरिया के 'वीमा' नाटक में दलित चेतना 28
– प्रा.डॉ.सावते प्रकाश नवनितराव 28
9.रत्नकुमार सांमरिया का कहानी साहित्य 30
– प्रा.विद्या बाबूराव खाने 30
10.रत्न कुमार सांमरिया की कहानियों में वृद्ध विमर्श 32
– डॉ.जय शंकर शुक्ल 32
11.बहिष्कृत समाज की मुक्ति की कहानियाँ 36
–प्रो.डॉ.किशोरी लाल 'पथिक' 36
12.रत्नकुमार सांमरिया की कहानियों में विकलांग चेतना 39
–रीता आहूजा 39
13.सात्विक आक्रोश की आग है, रत्नकुमार सांमरिया की कहानियाँ 43
–माधव नागदा 43
14.'स्त्री विमर्श' : आधी दुनिया का अध्ययन 46
–डॉ.अमल सिंह भिक्षुक 46
15.रत्न कुमार सांमरिया की कहानियों का अवलोकन एक दृष्टिमें 48
–डॉ.नवीन अग्रवाल 48
16.अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति है : सांमरिया के नाटक 54
–डॉ.अनिल कुमार बारिया 54
17.रत्नकुमार सांमरिया के नाटकों की अंतर्वस्तु वाया 'वीमा' 59

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर * जि. नांदेड *

–प्रोमिला 59
18.रत्नकुमार सांभरिया द्वारा रचित वीमा इस नाटक की प्रासंगिकता..63
–डॉ.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे..63
19.रत्न कुमार सांभरिया की कहानियां और दलित विमर्श..65
–डॉ. अनिता गोयल...65
20.रत्नकुमार सांभरिया के नाटकों में सामाजिक यथार्थ...70
–डॉ. रत्ना कुशवाह..70
21.रत्नकुमार सांभरिया के नाटक 'वीमा' की समीक्षा...73
–डॉ. सुधा राजपूत...73
22.रत्नकुमार सांभरिया जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन..................................75
–डॉ0 शशिबाला त्रिवेदी...75
23.रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित चेतना...81
–डॉ. जाधव ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब...81
24.स्त्री–विमर्श की दस्तावेजी कहानिया..84
– डॉ.पद्मजा शर्मा..84
25.रत्न कुमार सांभरिया की कहानियों में नारी चेतना...88
– [1]शिखा पाण्डेय [2]शिल्पी शर्मा...88
26.रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में– 'दलित चेतना'..91
–डॉ0 इन्दु यादव...91
27.रत्नकुमार सांभरिया के कथा साहित्य में दलित चेतना...92
–डॉ0फतेह सिंह..92
28.रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित चेतना...95
–[1]शिल्पी शर्मा, [2]शिखा पाण्डेय..95
29.रत्नकुमार सांभरिया के कथासाहित्य में दलित सामाजिक यथार्थ...98
–डॉ.मनिषा गंगाराम मुगळीकर..98
30.रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भाषा–विधान...100
–डॉ.स्नेहलता..100
31.रत्नकुमार सांभरिया का व्यक्तित्व : एक दृष्टि...105
–डॉ.अनिता वर्मा...105
32.रत्नकुमार सांभरिया के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं पर मंथन....................................108
–श्रद्धा श्री यादव...108
33. 21वीं सदी का दलित साहित्य; रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित जीवन के संदर्भ में..................110
–डॉ0विजय पाल..110
34.रत्नकुमार सांभरिया का व्यक्तित्व व कृतित्व..113

महाविद्यालय, देगलूर जि. नांदेड

18.रत्नकुमार सांभरिया द्वारा रचित वीमा इस नाटक की प्रासंगिकता

–डॉ.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे
सहाय्यक प्राध्यापक,–हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय देगलूर

आज हमारे देश में और समाज में नेत्रहींनो की स्थिती कैसी है इसका वर्णन वीमा इस नाटक में रत्नकुमार सांभरिया जी बहुत ही अच्छे ढंग से व्यक्त की है। नेत्रहीनों की तो बात छोंडो आज एक आम आदमी को अपना अधिकार पाने के लिए झुझना पडता है। ऐसे हालात आज हमारे देश में हुऐ है। आज हमारे सामने से को ही नेत्रहीन गुजरता है या हमारे साथ बैठता है तो हम उसे एक तुच्छ नजरों से देखते है। या उसके साथ नफरत ढंगो से पेश आते है। पहले से ही आज हमारे देश में और समाज नेत्रहीनों के प्रति दूषित दृष्टीकोन रखता है। यह हमारे जैसे नहीं है। समझकर उसके साथ कभी अच्छे ढंग बात करते है ना उसके साथ कभी अच्छे आचरण के साथ पेश आते है। ऐसे आज हमारे समाज में नेत्रहीनों को प्रताडीत करने का काम करते है। ऐसा सामाजिक भेदभाव का अन्याय का गलत व्यवहार हम हमारे समाज में जो नेत्रहीन है, उसके साथ करते है। ऐसा रत्नकुमार सांभरिया जीने अपने वीमा इस नाटक से आज हम नेत्रहींनो के बारे में कैसे सोचते है। यह प्रासंगिकता यहाँ इस नाटक से व्यक्त की है। ''जमन (वीमा से) वीमा ये गाँव नही शहर है। शहर चॅट होता है। हम दोंनो नेत्रहीन है। किसी की नीयत खोटी होते देर नही लगती। बस तुम तो एक बात गांढ बांध लो। होंढ तक मत खोलना। ''1

आज कितना आदमी मुल्यहीन, तत्वहीन नैतिकताहीन होते जा रहा है। इसका नतीजा आज समाज को भोगतना पड रहा है। आदमी को झूठ बोलने की आवश्यकता नही है, पर भी वह बेजवह अपने दोस्तों को मॉ–बाप को झूठ बोलता जा रहा है। कहाँ तो उसे अपने दोस्तों के साथ जाना है, तो दोस्त उसे पुछंते है, अरे भाई कहाँ है तो अभी नहीं आया, वह अभी घर में ही रहता है पर दोस्तों कहता है अभी आ रहा हु रास्ते में हु। इस तरह बेवजह आदमी झूठ बोलता जा रहा है। ऐसा झूठापन आदमी में बढता जा रहा है। ''जमन– अरे – अरे कोई अबला गुहार कर रही है। गुंडा पीछे पडा लगता है। उसको गुंडा – अरे चुप रह पगली कोई सुन लेगा। कोई आ निकलेगा इधर। नारी स्वर – अरे छोंड। अरे छोड।। छोड दे दुष्ठ। छोड मुझे। अरे बचाओ। बचाओ कोई है ? '' 2वीमा घर से अकेली भागकर गाँव से शहर आती है और रेल्वे पठरी के पास खडी है। वहाँ कुछ गुंडे आते है और उसके साथ मैं भी अंधा हू कहकर उसके साथ छेडछानी करने का प्रयास करते है। कोई अकेली लडकी दिखी तो किस प्रकार से उसके साथ पेश आते है। आज हमारे देश में रोज कई लडकियों के साथ अन्याय–अत्याचार होता है, हर दिन हम अखबार और समाचारें सुनते है। आज हमारे देश की हमारी माता – बहनों सुरक्षित नहीं है। अकेला कहॉ घूमना खतरनाक साबीत हो रहा है। इस तरह से आज हमारी नैतिकता, मुल्यहिनता कमजोर हुई है। यह इस नाटक से रत्नकुमार सांभरिया यह प्रासंगिकता कहना चाहते है।

आज हमारे समाज में बढे पैमाने पर जातीयता बढती जा रही है। जातीयता बढने की वजह से सही मायने में हमारे देश की तरक्की नही हो रही है। जातीयता के नाम पर अलग – अलग धर्मो में जगडे हो रहे है। दंगे, फसाद होते जाते है। सरकारी दप्तर , गाडीयाँ जलाई जाती है। इससे लोगों के मन नफरत में बदलते जा रहे है। कोई हमारे समाज में अंतरजातीय शादी करता है तो उसे मोर दिया जाता है, या समाज से अलग कर दिया जाता है उसे डर – डर कर जींदगी गुजारनी पडती है । ऐसे हालात आज हमारे देश में जातीयता को लेकर पैदा हुऐ है।''जमन – तुम ऊँची जात। मैं नीची जात। तुम सवर्ण में दलित। मन मे उँच–नीच का भेद रहते गृहस्थी की गाडी नहीं चलती।''3 इस तरह से रत्नकुमार सांभरिया जी ने जातीयता और अंतरजातीय शादी को लेकर हमारे समाज की प्रासंगिकता व्यक्त की है।आज हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था में बढे पैमाने पर घोटाले होते जा रहे है। आज गरीबों को बच्चों को पढाना मुश्कील होते जा रहा है। सरकारी स्कूल बंद होते जा रहे है, और नीजी स्कूलों की फी महँगी होती जा रही है। गरीब बच्चों की शिष्यवृत्ती के पैसे नहीं दिऐ जाते है। सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को निजीकरण करके बढे–बढे घोटाले करने का काम किया है। किसी स्कुल या महाविद्यालय में अध्यापक को नौकरी पर लेने के लिए पैसे लिए जाते है। यह इस नाटक में शिक्षा व्यवस्था में प्रासंगिकता है''जमन – किसी के सामने मूँह मत खोलना कि तनखा कितनी मिलती है। सुनों, दीवारें के भी कान होते है। वीमा किसी को बता दोगी, जान आफत आएगी। वीमा – हूँ। जमन – वी यह संस्था है न सरकार के अनुदान से चलती है। अब मुझे तो दिखता नहीं है। पेन पकडकर साइन करा लेते हैं मेंरे। वीमा – रोकड ? जमन – रोकड। साइन तो ज्यादा पर ही कराते बताए। मेरी हथेली पर एक हजार रख देते हैं, बस !''4

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर, जि. नांदेड

आज हमारे देश में सरकारी दप्तरों काम चार महिने तक थांब ! ऐसी हालत है। इसके लिए हमारे सरकारी बाबू जिम्मेदार है। किसी भी आम आदमी का काम एक झटके में नहीं करते है। उस आदमी बार–बार आपना काम करने के लिए आना पडता है और कुछ रिश्वत देने पडती है। तब जाकर सरकारी दप्तरों में काम आम–आदमी होता है। ऐसी स्थिती आज सरकारी दप्तरों की है। यह प्रासंगिकता इस नाटक के माध्यम से रत्नकुमार सांभरियाजी दिखाना चाहते है।''जमन – सर मैं आपको हाथ जोडता हूँ। वीमा के लिए मेरी मदद करें।आका – (धमका कर) मदत –इमदाद ? तुम्हें शर्म आई, दन्द – फन्द करते। ऐसा तो चोर उचक्के भी नहीं करते। मदत करों, इधर–उधर की छोडो। विवाह के लिए अर्जी दे जाओ, अपनी। जमन–सर, प्रेम के पौधे पर जात की कुल्हाडी, मार रहे है, आप। जो श्यामाजी कह रहे थे, वही आप कह रहे है।अर्जी नहीं दुँगा में।आका – आँखो के ही नहीं, अकल के भी अँधे हो तुम, चले जाओ यहाँ से। मेरे पास जो लोग बैठे है, बहुत खतरनाक है।''5इस तरह से आज हमारे सरकारी अफसर काम करते है। जो नेत्रहीन और गरीब आम–आदमी उम्मीद से अपना काम करने के लिए सरकारी दप्तर चला जाता है। तो उसे एक गुंडे की तरह सरकारी अफसर उसे धमकाते है। जो बढा राजनेता है (श्यामाजी) जैसा उसके पीछे धूम हिलाते चापलुसी करते घूमते है। आम आदमी का काम करने के लिए इनको तनखा दी जाती है और यह इस प्रकार लोगों के साथ पेश आते है। ऐसी स्थिती आज हमारे देश में कुछ अफसरों की है। यह प्रासंगिकता इस वीमा नाटक से लेखक दिखाना चाहते है।

आज हमारे देश में पोलीस प्रशासन की व्यवस्था कैसी है, इसका जीता – जागता उदाहरण इस नाटक में रत्नकुमार सांभरिया जी ने दिया है। आज पोलीस का जो धाक है, सिर्फ आम–लोगों के लिए ही है। पोलीस प्रशासन का कायदा कानून सिर्फ आम–आदमी के लिए है। बढे – बढे लोग इस पोलीस प्रशासन के कायदा कानून से बचकर बाहर आते है। आज की पोलीस भी जमन जैसे नेत्रहीन (आम–आदमी) का काम नहीं करती है। और बढे लोगों ने सिर्फ एक फोन करने के बाद उनके काम जल्दी–जल्दी करने लगती है। यहाँ आज आम–आदमी का FIR भी दर्ज करके लेते नही है। बढे लोगों के उपर केस भी दर्ज करके लेते नहीं है। आज आदमी देखकर हमारा पोलीस प्रशासन काम करता है। ऐसी वास्तविकता हमारे देश में है।''थानेदार – अर्जी दो।देवत – जेब से कागज निकाल कर यह रही सर। तुरन्त कार्रवाई करे सर। बंधा–बंधाया घर उजाड दिया, बेचारे का।थानेदार – अर्जी लेकर ठीक है, ठीक है। कार्रवाई हो जाएगी। जाओ–जाओ। देवत – थाने का एक कॉस्टेबल मेरा परिचित है। उससे मोबाईल करे पुछा था, मैने आज। कह रहा था – तुम्हारी वह अर्जी जैसी दी थी, वैसी थानेदार की टेबल पर ही रखी हुई है, रिमार्क तक नही।''6 ऐसी यथार्थता आज हमारे देश में पोलीस प्रशासन में है। कई जमन से आम–आदमी है, वह आज भी न्याय के इंतजार में बैठे है। यह इस वीमा नाटक में हमे प्रासंगिकता नजर आती है।आज हमारे देश में मीडिया की हालात बहुत ही कमजोर हुई है। जो समाज को सच्चाई, यथार्थता, वास्तविकता दिखाना आज कोसों दूर है। कुछ भी लोंगों को दिखाकर उन्हे गुमराह करने का काम आज के लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कर रहा है। आज पत्रकारिता मीडीया समाजसापेक्ष नहीं रहा है। वह व्यक्ति सापेक्ष बन गया है। बेरोज़गारी , महँगाई, हमारा विकास कितना हुआ है। यह न दिखाकर कुछ अलग ही दिखाकर लोगों को भ्रमित करने का काम आज की पत्रकारिता कर रही है।

अमीर लोगों को छुपाकर रखना और गरीब लोगों का खोल–खोलकर देखना ऐसी परिस्थिती आज हमारे समाज में देखने को मिलती है। आज लोकतंत्र चौथा स्तंभ अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से नही निभा रहा है। इसलिए वह आज खतरों में है। आज पत्रकार तो दवाब तंत्र के हिसाब से पत्रकारिता करते नजर आते है। ऐसा परिवेश आज पत्रकारिता करते नजर आता है। ऐसा परिवेश आज पत्रकारिता के दुनिया में नजर आने लगा है। इस वीमा नाटक में झा साहब जैसे पत्रकार कैसे है। वैसी ही आज हमे पत्रकार दिखाई देते है।''जमन – कहते थे, खबर हैं। नवें पृष्ठ पर छपी है। अब कहते है। खबर है ही नहीं।देवत – सच, खबर है ही नही, जमन।जमन – क्या है फिर ?देवत – निःशक्तों के विश्वास पर कुल्हाडी।जमन – है ! क्या कहा ? निःशक्तों के विश्वास पर कुल्हाडी ? प्रेस लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है ?देवत – हाँ ! शातिर, शुतूर, धोखेबाजों ने स्तंभ में दरार ला दी है। घबराओ मत। बिलकुल मत घबराओ। हम निःशक्त है। न हमारी जात है, न हमारी पाँत है। वीमा आएगी, जरुर आएगी। हिम्मत नहीं हारनी है, हमें।''7इस प्रकार झा साहब पत्रकार जमन वर्मा और देवत सिंह को धोका देकर चले जाते है। ऐसा हमारा लोकतंत्र चौथा स्तंभ हमे धोका देते जा रहा है।

इस तरह से रत्नकुमार सांभरिया जी के वीमा नाटक से आज की प्रासंगिकता नजर आती है।

संदर्भ सूचि – (1)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.35 (2)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.32 (3)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.46 (4)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.38 (5)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.30–31 (6)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.55–56 (7)वीमा–रत्नकुमार सांभरिया, पृष्ठ कृ.64